२२: प्रतिपादन-४ : विकसित चेतना विधि

दिनांक -१५/१०/२०११

मानव परम्परा में ही चैतन्य इकाई अर्थात जीवन जागृतिपूर्वक अर्थात विकसित चेतना पूर्वक मानवत्व, देव मानवत्व, दिव्य मानवत्व को प्रकाशित करता है | भ्रमित रहने की स्थिति में जीव चेतनपूर्वक पशु मानव, राक्षस मानव रूप में प्रकाशित होता है | इसका प्रमाण यही है कि विकसित चेतना पूर्वक मानव सर्देश काल में जीने की स्थिति में सम्पूर्ण धरती का मानव धर्म एक होना, मानव जाति एक होना स्वीकार होता है; फलस्वरूप अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था बनती है | अखण्ड समाज में धरती के सभी कोने के आदमी समझदारी के साथ समाया रहता ह जबकि जीव चेतना विधि से अनेक जाति, मत, संप्रदाय, भाषा, वर्ग के आधार पर जीना बनता है | फलस्वरूप अपना पराया का दीवार बन ही जाता है मान्यता के रूप में | यह सब सामान्य सर्वेक्षण से स्पष्ट हो जाता है | विकसित चेतना विधि से सोचने पर भाषा के रूप में यह स्वीकार नहीं होता और जीने के क्रम में जीव चेतना को अपनाए रहता है | स्वयं किये जाने वाले अपराध को वैध मानता है, दूसरे द्वारा किये गए अपराध को अवैध मानता है | फलस्वरूप शिकायत बनता है | भाषा के रूप में स्वीकारा गया, प्रमाणित करने में असमर्थता रह ही जाती है | जीने के क्रम में सार्थकता ही अर्थात प्रमाण ही आगे आगे वैधता विधि को स्पष्ट करने में समर्थ बनता है | इस क्रम में चलता हुआ मानव जात अन्ततोगत्वा अर्थात जीव चेतना में जीता हुआ मानव का फल परिणाम स्वरूप धरती बीमार होने से, प्रदूषण छा जाने से, मानव जात में अपराध प्रवृत्ति बढ़ जाने से पुनर्विचार की आवश्यकता बनी | पुनर्विचार विधि से सोचने पर यही बनता है कि मानव त्रिस्तरीय प्रमाण है -१-अनुभव प्रमाण २-विचार प्रमाण ३-व्यवहार प्रमाण |

जागृत मानव परम्परा में जीता हुआ आदमी इन तीनों प्रकार के प्रमाणों के संयुक्त रूप में जीता है | अनुभव प्रमाण का स्वरूप समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व के रूप में प्रचलित होना सहज है | अनुभव सहअस्तित्व में ही होता है | इसे भले प्रकार से परखा गया है | अनुभव प्रमाण के आधार पर किया गया विचार प्रमाण नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म,सत्य रूप में होता है | परम सत्य को सह-अस्तित्व में देखा गया है | धर्म को सर्वतोमुखी समाधान के रूप में देखा गया है | क्योंकि समाधान=सुख=मानव धर्म | समस्या=दुःख, मानव को दुःख अस्वीकृत है, समाधान स्वीकृत है | बच्चों से बड़ों तक सभी आयु वर्ग में परीक्षण किया गया है | बच्चों से पूछने पर, कि समाधान चाहिए या समस्या, उत्तर में समाधान को स्वीकृत करते हैं | जबकि समाधान को जाने नहीं रहते अर्थात हर मानव को समाधान स्वीकृत है, न्याय स्वीकृत है | इस क्रम में मानव परम्परा में न्याय प्रमाणित होता है | नियम,नियंत्रण, संतुलन, बीज वृक्ष न्याय के साथ प्राण अवस्था, परिणामानुषंगी विधि से पदार्थ अवस्था नियंत्रित करने का अधिकार केवल मानव के पास रहता है |

यह अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था विधि से फलित होता है | फलस्वरूप मानव के साथ न्याय, धर्म, सत्य प्रमाणित होता है | इसी सत्यतावश मानव परम्परा के लिये चेतना विकास मूल्य शिक्षा, अस्तित्वमूलक मानव केंद्रित चिंतन के आधार पर अस्तित्व दर्शन सह-अस्तित्ववाद के रूप में प्रस्तुत किया है | इसे कुछ विद्वान परीक्षण करने में लगे हैं, कुछ लगने वाले हैं | फलतः कुछ दिनों में लोग समझ लेंगे | समझदारी मानव का वैभव है | समझदारीपूर्वक हर मानव न्याय, धर्म, सत्य

सहज विधि से जीता है | फलस्वरूप नियम, नियंत्रण, संतुलन सहज कार्यों में प्रवीण होता है | ऐसे अधिकार सम्पन्न हर व्यक्ति में समझदारी से समाधान, श्रम से समृद्धि होना प्रमाणित हो जाता है |

हर परिवार में दस व्यक्तियों का होना अनुमानित है | यह तीन पीढ़ी के आधार पर है | कम से कम तीन पीढ़ी के साथ मानव जीता है | चाहे घृणा करें, चाहे मूल्यांकन करें, चाहे कर्तव्य निर्वाह करें | कर्तव्य निर्वाह करना और मूल्यांकन करना विकसित चेतना पूर्वक सम्पन्न होता है | घृणा, उपेक्षा, विरोध करना जीव चेतना विधि से सम्पन्न होता है | इसे भली प्रकार से सर्वेक्षण किया गया है | इसी क्रम में मानव अभी तक जीव चेतना में जीते हुए भी मानव चेतना के प्रति जिज्ञासु है | जिज्ञासा का मतलब जीने की आशा से है | भौतिकवादी विचारधारा, आदर्शवादी विचारधारा इसका भरपाई कर नहीं पाया | परिणामस्वरूप मनमानी विधि से जीवों से अच्छा जीने के लिए सफलता प्राप्त करने में जो प्रयुक्तियाँ हुई उसमें से सर्वाधिक अपराधिक अथवा मूल में अपराध के परिणाम स्वरूप में धरती बीमार होना हुआ | धरती बीमार होने के मूल में विकिरणीय धातुओं का प्रयोग विधि है, यह देखा गया है |

यह लगभग तीन हजार बार तक हो चुकी है | इन सभी प्रयोगों में प्रकाशित ऊष्मा सूर्य बिम्ब ऊष्मा के बराबर होना माना जाता है | यह सभी ऊष्मा धरती में समाया है | फलस्वरूप धरती तापग्रस्त हो गयी | दूसरा- खनिज कोयला, खनिज तेल का प्रयोग हुआ जिसके धुआं से प्रदूषण होना देखा गया है और ताप धरती में ही समाया है | इस प्रकार धरती सुधरने का अवसर ही नहीं रहा | इसलिए प्रस्तावित किया गया है कि मानव भ्रममुक्त, अपराधमुक्त होना आवश्यक है | भ्रममुक्त होने पर ही मानव में अपने में स्वस्थ विचार होना बनता है | स्वस्थ विचार का मतलब ही समाधानपूर्ण क्रियाओं को करना है | ऐसे समाधानपूर्ण विचार विकसित चेतना विधि से सुलभ होता है | यह चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से होना पाया जाता है | आदर्शवादी विधि से बहुत सारे बातों को उपदेश विधि से प्रस्तुत किया है, वह कुंठित हो गया है | जबकि भौतिकवाद में सुधरने का कोई प्रस्ताव ही नहीं है | ऐसा न हो तो वैसा करेंगे, वैसा न हो तो तैसा करेंगे | इस विधि से मानव सुधरने का कोई रास्ता नहीं रहा | रास्ता है तो मात्र विकसित चेतना का। -

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत